MIZORAM UNIVERSITY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A Refereed Bi-annual Journal
ISSN(P): 2395-7352
eISSN: 2581-6780
Vol. IX, Issue 2 (December 2023) http://www.mzuhssjournal.in/

Developmental Path of Hindi Story

Vanlalpari Chinjan*
Akhilesh Kumar Sharma†

Abstract

From ancient times till now, the usefulness of stories remains intact in human society. Be it any caste, religion, class or sect of people, the story has been heard from everyone's mouth. This tradition of oral storytelling is centuries old. Due to this tradition, the foundation of story genre was laid in Hindi literature. The story is related to man, society and public life. The story is influenced by the country-period and environment. For this reason, the form of the story has also been changing. It has seen changes in its existence by going through many movements. These changes are an indication of the richness of Hindi literature. From ancient times to modern times, Hindi stories evolved in different forms and progressed. Hindi newspapers and magazines have played a very important role in providing a strong direction to Hindi fiction.

Keywords*: Tradition, History, Movements, Hindi Newspaper and Magazines.*

*Research Scholar, Department of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram, India. Email: parteii09@gmail.com
†Assistant Professor, Department of Hindi, Mizoram University, Aizawl, Mizoram, India. Email: akhileshksharma82@gmail.com

हिन्दी कहानी का विकासपथ

वानललपारी चिंजन[‡]
अखिलेश कुमार शर्मा[§]

शोध-पत्र सार

प्राचीन काल से लेकर आज तक मानव समाज में कहानी की उपादेयता बरकरार है। किसी भी जाति, धर्म, वर्ग, संप्रदाय के लोग हों, सभी के मुख-विवर से कहानी सुनी-सुनाई जाती रही है। मौखिक कहानी की यह परंपरा सदियों पुरानी है। इसी परंपरा के चलते हिन्दी साहित्य में कहानी विधा की नींव गढ़ी गई। कहानी का संबंध मनुष्य, समाज और जन जीवन से है। कहानी देशकाल-वातावरण से प्रभावित होती है। इसी कारण कहानी के स्वरूप में भी परिवर्तन होता आया है। इसने कई आंदोलनों से गुजरकर अपने अस्तित्व में परिवर्तन देखा है। यह परिवर्तन हिन्दी साहित्य की समृद्धता की ओर संकेत है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक आते-आते हिन्दी कहानी विभिन्न रूपों में ढलकर आगे बढ़ती गई। हिन्दी कथा साहित्य को मजबूत दिशा प्रदान कराने में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

बीज शब्द: *परंपरा, इतिहास, आंदोलन, हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ।*

हिन्दी साहित्य में गद्य विधा की शुरूआत सामान्यत: आधुनिक काल यानी 1900 ई. से मानी गई है। इस वर्ष से हिन्दी कहानी का मुद्रित रूप सरस्वती पत्रिका के जरिए सामने आया। हालाँकि इसके पहले भी भारतीय परंपरा में मौखिक रूप से कथा एवं कहानियाँ प्राचीन काल से विद्यमान रही हैं। "कहानी में कहने की विशेषता बराबर महत्वपूर्ण रही है। लोक और शिष्ट दोनों रूपों में उसका सम्बन्ध वाचिक परंपरा से अधिक रहा। यह रोचक बात है कि हमारी भाषा के मुहावरे में कविता लिखी जाती है और कहानी कही जाती है। तब यह

[‡]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजोल, मिज़ोरम. ई-मेल: parteii09@gmail.com
[§]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइजोल, मिज़ोरम. ई-मेल: akhileshksharma82@gmail.com

स्वाभाविक है कि अपने नये मुद्रित रूप में कहानी का हिंदी साहित्य में आविर्भाव बीसवीं शती के आरंभ में होता है, साहित्यिक पत्रकारिता के उदय के साथ। मनोरंजन से हटकर एक अनुभूति का सीधा साक्षात्कार अब उसका विधागत लक्ष्य हो जाता है।"[1] इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कहानी केवल मनोरंजन का साधन नहीं है; वरन यह एक अनुभूति है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक अनुभूत की जाती है। इन अनुभूतियों के कारण ही कहानी विधा का अस्तित्व मजबूत बनता गया है।

हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में भारत की प्राचीन कथा, लोक कथा एवं पाश्चात्य कथा का सम्मिलित रूप देखने को मिलता है। मोटे तौर पर हिन्दी कथा साहित्य की उत्पत्ति आधुनिक काल से ही मानी गयी है। हिंदी कहानी का आरंभ 'सरस्वती' पत्रिका (जिसका प्रकाशन वर्ष 1900 ई.) में प्रकाशित कहानियों से माना जाता है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में "हिंदी कहानियों का प्रारंभ सभी इतिहासकारों ने एक स्वर से 'सरस्वती' के प्रकाशन से ही स्वीकार किया है।"[2] इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन पूर्व भी कहानियाँ लिखी गई होंगी।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार - "अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाओं में जैसी छोटी-छोटी आख्यायिकाएँ या कहानियाँ निकला करती हैं, वैसी कहानियों की रचना 'गल्प' के नाम से बंगभाषा में चल पड़ी थीं। ये कहानियाँ जीवन के बड़े मार्मिक और भावव्यंजक खंडचित्रों के रूप में होती थीं। द्वितीय उत्थान की सारी प्रवृत्तियों का आभास लेकर प्रकट होने वाली 'सरस्वती' पत्रिका में इस प्रकार की छोटी कहानियों के दर्शन होने लगे।"[3]

अतः हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में पाश्चात्य और बांग्ला साहित्य का भी योगदान रहा है। 'सरस्वती' पत्रिका हिन्दी कहानी के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है। इस तथ्य की पूर्ति के लिए डॉ. नगेन्द्र और डॉ. हरदयाल के शब्दों को देखा जा सकता है - "सरस्वती के प्रकाशन के पूर्व आधुनिक कलात्मक हिन्दी कहानियों का अस्तित्व नहीं था।"[4] हिन्दी साहित्य में हिन्दी कहानी एक प्रमुख कथात्मक विधा है। इस विधा से हिन्दी साहित्य में नया मोड़ आया है; परंतु साथ ही हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी को लेकर विद्वानों में मतभेद रहा है। हिन्दी की प्रारंभिक कहानियों में कहानी कला के गुण कम पाए गए। जाहिर-सी बात है कि शुरुआती दौड़ में किसी भी विधा का रूप पूर्ण नहीं होता है। हिन्दी कहानी की प्रारंभिक अवस्था में प्राचीन-कथा-साहित्य, लोक-कथा-साहित्य तथा पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव देखने को मिलता

है। भारत का कथा साहित्य उपनिषदों, बौद्ध और जैन साहित्यों तथा संस्कृत कथा साहित्य में जन्म ले रहा था। प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य में रचे गए पद्यबद्ध कथाओं का भी योगदान रहा है। चारणों के साहित्य में भी कथा-साहित्य के रूप यथा- इतिहास, बात, प्रसंग आदि पाए गए हैं। हिन्दी कहानी की पृष्ठभूमि भारत के प्राचीन कथा साहित्य में विराजमान है। भले ही इसका रूप बिखरा हुआ क्यों न हो। यह विविध भाषाओं से गुजरते हुए अपने स्वरूप का गठन करती चली है।

लोक कथाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। प्राचीन जनजीवन में कथाओं का मौखिक रूप विद्यमान रहा, पर मौखिक रूप में भी यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होता चला आया, जिसके कारण लोक कथाओं से प्रेरित होकर हिन्दी कहानियों का विकास हुआ। हिन्दी कथा साहित्य में पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव को भी देखा जा सकता है। हिन्दी कहानी का उद्भव बीसवीं सदी के प्रारंभ में हुआ। साथ ही प्रेरणा का स्रोत लेकर 1900 ई. के आस-पास शेक्सपियर के अनेक नाटकों के अनुवाद 'सरस्वती' में कहानी रूप में प्रस्तुत किए गए। इन तथ्यों की पुष्टि के लिए डॉ. रामचन्द्र तिवारी के कथन को यहाँ देखा जा सकता है- "जहाँ तक 'इतिवृत्त' का प्रश्न है, हिन्दी-कहानीकारों ने प्राचीन भारतीय कथा-साहित्य, लोक-कथाओं तथा पाश्चात्य-साहित्य इन तीनों से सामग्री ली।"[5] अतः हिन्दी कहानियों का विकास समृद्ध एवं व्यापक रूप में हुआ है, जिससे इसका स्वरूप विस्तृत होता गया है।

हिन्दी कहानी की प्रारंभिक अवस्था बिखरी हुईथी, पर बदलते समय के साथ-साथ अनेक कथाकार सामने उभरकर आए; लेकिन मुंशी प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कहानी के विकास में एक नया मोड़ आया जिसके तहत हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को दर्शाने के लिए प्रेमचंद को केंद्र में रखा जा सकता है। इस प्रकार प्रेमचंद को कहानी विधा का आधार स्तम्भ मानते हुए हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

a) प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी
b) प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी
c) प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी

यह काल हिन्दी कहानी का शैशावस्था काल कहा जा सकता है। इस काल में हिन्दी कहानी का जन्म हुआ। अपने स्वरूप की पहचान के लिए हिन्दी कहानी कई रूप धारण करते

हुए अग्रसर होती गई। इस काल में कहानी की कोई विशेष पहचान नहीं थी। लेकिन इसकी शिल्पविधि का विकास हो रहा था। हिन्दी कहानी का प्रारंभ मुख्यतः द्विवेदी युग से ही माना जा सकता है। तथापि इस काल में अधिकतर साहित्यकार नाटक और निबंध लिखने में सक्रिय थे। इस काल में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से बहुत-से कहानीकार सामने आए। इसी के तहत 'सरस्वती' पत्रिका में 1900ई. में प्रकाशित किशोरी लाल गोस्वामी कृत 'इंदुमती' को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना। लेकिन शिवदान सिंह चौहान के अनुसार यह कहानी शेक्सपीयर के 'टेम्पेस्ट' का अनुवाद है, जिसके कारण यह मौलिक रचना नहीं कही जा सकती है। इसके अलावा मुंशी इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1872) को रामरतन भटनागर ने हिन्दी की प्रथम कहानी माना है। तो माधवराव सप्रे कृत 'एक टोकरी भर मिट्टी' (1901) को देवीप्रसाद वर्मा ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है।

इस कतार में रामचन्द्र शुल्क कृत 'ग्यारह वर्ष का समय' (1903) को डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल ने हिन्दी की प्रथम कहानी माना है। तो बंग महिला कृत 'दुलाई वाली' (1907) को रायकृष्ण दास ने हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है। इस प्रकार हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी को लेकर विद्वानों के मत भिन्न-भिन्न हैं। उपर्युक्त भिन्न मतों में सामान्यतः 'इन्दुमती' को ही हिन्दी की प्रथम कहानी माना गया है। जबकि "शिल्पविधि की दृष्टि से हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी है, रामचन्द्र शुल्क कृत 'ग्यारह वर्ष का समय'।"[6] इस कहानी से ही मौलिक हिन्दी कहानी की शुरुआत मानी जाती है। इसके आगे भी हिन्दी की मौलिक कहानियों का सृजन होता गया। साथ में बंगला तथा अंग्रेजी आदि से भी अनुवाद किया जाने लगा।

1906 ई. में पं. वेंकटेशनारायण की 'एक अशरफी की आत्मा-कहानी', लाला पार्वतीनन्दन की 'एक के दो दो', पं. सूर्यनारायण दीक्षित की 'चन्द्रहास का अद्भुत आख्यान' आदि कई मौलिक कहानियाँ 'सरस्वती' में प्रकाशित हुईं। "सातवें वर्ष की 'सरस्वती' में बंगमहिला कृत 'दुलाई वाली' कहानी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानी गयी है। कुछ आलोचकों ने इसे ही हिन्दी की आदि मौलिक कहानी के रूप में स्वीकार किया है।"[7] इसी क्रम में 'सरस्वती' के नवें और दसवें वर्ष में वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'राखीबन्द भाई' तथा 'तातार और एक वीर राजपूत' कहानियाँ प्रकाशित हुईं। एक ओर 'सरस्वती' के नवें वर्ष ही यानि "1909 में काशी से 'इन्दु' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ और इसी के माध्यम से 'प्रसाद' का कहानी-साहित्य में प्रवेश हुआ।"[8]

इनकी प्रारंभिक कहानियाँ - आग, चन्दा, गुलाम, चितौर-उद्धार आदि प्रकाशित हुईं। बंगला कहानियों के अनुवादों का प्रकाशन अधिकतर इसी पत्रिका में हुआ। "बंगला के प्रसिद्ध पत्र 'प्रवासी' से अनेक कहानियों का अनुवाद पं॰ पारसनाथ त्रिपाठी ने 'इन्दु' में प्रस्तुत किया।

हिन्दी-कहानी के विकास में प्रवासी का प्रभाव ऐतिहासिक महत्त्व रखता है।"[9] इस प्रकार कहानियों के मुद्रित रूप का अंकन होता गया और कहानी के इतिहास का रूप गढ़ता गया और कहानी का विकास होता चला गया। कहानी विधा की उत्पत्ति के विषय में श्री रामस्वरुप चतुर्वेदी का कथन दृष्टव्य है- "कहानी हर रूप में उपन्यास से पुरानी विधा है। गीत और कहानी मानव सभ्यता से साक्षरता-काल के पहले से जुड़े हुए हैं, यद्यपि दोनों के लक्ष्य कुछ भिन्न रहे हैं। गीत में मनुष्य ने अपने को व्यक्त किया और कहानी से दूसरों का मनोरंजन। आदिम काल से चली आती ये वृत्तियाँ इन दोनों काव्य-रूपों से आज भी जुड़ी दिखती हैं।"[10] इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कहानी बहुत पुरानी विधा है, जिसका अस्तित्व मनुष्य के साथ बहुत गहरा है। इस प्रकार देखा जाए तो इस युग में कहानीकार सामने तो आए पर इनकी कहानियों में मौलिकता कम और अनुवाद कार्य अधिक पाया गया। प्रेमचंद और प्रसाद से पूर्व कहानी लेखन बहुत कम हुए। इस युग की रचित कहानियों में आम जीवन की सच्चाईयों का रूप बहुत कम मिलता है। अतः इस काल में जितनी भी कहानी सामने आईं, वें पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही जनता के सामने प्रस्तुत हुईं।

प्रेमचंदयुगीन हिन्दी कहानी

हिन्दी कहानी का विकास क्रम मूलत: प्रेमचंद युग से ही देखा जा सकता है। प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कहानी को नई राह प्राप्त हुई। इस युग में कथा का विकास जादुई एवं तिलिस्मी चमत्कारों से हटकर चरित्र की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं पर होने लगा। प्रेमचंद की प्रथम कहानी 'पंचपरमेश्वर' का प्रकाशन सरस्वती में 1916 में हुआ। इस कहानी से मनोवैज्ञानिक कथानकों की शुरुवात होती है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने इस युग को कहानी के विकास युग की संज्ञा दी है। वे लिखते हैं - "विकास-युग के प्रथम चरण में सरस्वती के माध्यम से चंद्रधर शर्मा गुलेरी और प्रेमचंद, इन्दु के माध्यम से 'प्रसाद' तथा हिन्दी गल्पमाला के माध्यम से जी. पी. श्रीवास्तव तथा इलाचन्द्र जोशी आदि प्रमुख कहानी लेखक सामने आये।"[11] फिर आगे चलकर हिन्दी कहानियों में दो धाराएँ सामने आईं - पहला, यथार्थवादी दृष्टिकोण जिसमें जीवन के व्यावहारिक पक्ष को दर्शाया गया। इसमें प्रेमचंद, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन प्रमुख हैं। दूसरा, आदर्शवादी दृष्टिकोण जिसमें भाव सत्य को

महत्त्वपूर्ण रखा गया। इसमें जयशंकर प्रसाद, चंडीप्रसाद तथा राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह प्रमुख हैं।

प्रेमचंद ने अपने युग को एक नई राह प्रदान की जिसमें अपनी कहानियों के माध्यम से 1930 तक आते-आते ये कथा-साहित्य के सम्राट कहलाए। इन्होंने 300 से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। इनकी विशिष्टता यह है कि इन्होंने अपने आपको युगानुसार परिवर्तित किया। उनके लेखन की शुरुआती दौड़ से लेकर उनके अंतिम दिनों तक उनके दृष्टिकोण और मान्यताओं में बदलाव आया है। इनकी कहानियाँ ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित होती हैं। उनके अनुसार कहानी जीवन का अंग है। इसीलिए ये सामाजिक सत्य से मनोवैज्ञानिक सत्य तक पहुँच गए। इस युग में हिन्दी कहानियों के विभिन्न रूप उभरे। आलोचकों के मतानुसार यह विभिन्न रूप इस प्रकार हैं-

(क) चरित्र प्रधान कहानियाँ - इन कहानियों में लेखक का मुख्य उद्देश्य किसी चरित्र का सुंदर चित्रण करने से होता है। इस प्रकार के कहानी लेखन में प्रमुख प्रेमचंद हैं। इनकी आत्माराम, बड़े घर की बेटी, बाँका गुमान, दफ्तरी, बूढ़ी काकी आदि कहानियाँ चरित्र प्रधान कहानियाँ हैं।

(ख) वातावरण प्रधान कहानियाँ - इस तरह के कहानियों में भावना के प्रेरक उपादानों को कथानक का मूल कारण बना दिया जाता है और कहानी में यह सजीव होकर कहानी की केंद्र बिन्दु बन जाते हैं। इसके अंतर्गत जयशंकर प्रसाद, सुदर्शन तथा गोविंदवल्लभ पन्त आदि लेखक आते हैं। प्रसाद जी की आकाशदीप, प्रतिध्वनि, बिसाती, हिमालय का पथिक आदि कहानियाँ वातावरण प्रधान कहानियाँ हैं।

(ग) कथानक प्रधान कहानियाँ - इस प्रकार की कहानियों में चरित्र तथा परिस्थितियों के संबंध पर ज़ोर दिया जाता है। इस प्रकार की कहानी लिखने वालों में विश्वम्भरनाथ शर्मा ‘कौशिक’, ज्वालादत्त शर्मा तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि प्रमुख हैं।

(घ) कार्य प्रधान कहानियाँ - इन कहानियों में लेखक केवल कार्य पर ही शुरूआत से अंत तक बना रहता है। इसके अंतर्गत गोपालराम गहमरी की जासूसी कहानियाँ और दुर्गाप्रसाद खत्री की वैज्ञानिक कहानियाँ आती हैं।

इन उपर्युक्त कहानियों के अलावा ऐतिहासिक, हास्य एवं व्यंग्य प्रधान, प्राकृतवादी और प्रतीकवादी कहानियाँ भी इस युग में लिखी गईं और ये कहानियाँ अपने आप में ऐतिहासिक महत्त्व रखती हैं। लेकिन आज इस युग की कहानियों के वर्गीकरण को वैज्ञानिक नहीं माना जा रहा है क्योंकि कहानी को अनुभूति की एक इकाई माना जा रहा है। प्रत्येक काल या युग

के मूल्यांकन के लिए अपने मानदंड होते हैं। इसलिए “प्रेमचंद-युग के आलोचक से आज के मूल्यों और मानों की आशा करना उसके साथ अन्याय करना है”[12] प्रत्येक युग के लेखकों की अपनी पहचान होती है। इस काल में प्रेमचंद के कहानियों का चरम रूप उभरकर सामने आया है।

शैली रूपों में भी विकास कहानी प्रकारों के साथ हुआ। पाँच शैलियों का प्रमुख रूप से प्रचलन होता है। प्रथम वर्णनात्मक शैली है। इसका प्रचलन सबसे अधिक होता है। इसमें लेखक पूरी की पूरी कहानी को सुनाता है। दूसरी संलाप शैली है। इस शैली का कम प्रयोग होता है। इसमें वार्तालाप के जरिए कथा और चरित्र का विकास होता है। तीसरी शैली के अंतर्गत आत्म-चरितात्मक शैली आती है। इसमें लेखक खुद को उत्तम पुरुष में रखता है और कहानी रचता है। चौथा है पत्र-शैली और पाँचवाँ है डायरी-शैली। इन शैलियों में कहानियों की रचना होती रही और कहानी विधा समृद्ध होती गई।

इस युग के अंतिम चरण में हिन्दी कहानियों की नई दिशा सामने आई। स्वयं प्रेमचंद भी पहले आदर्शवादी कहानी लिखते थे, लेकिन अपने युग की सुधारवादी परछाई में वे भी यथार्थयुक्त कहानियाँ लिखने लगे। प्रेमचंद युग से ही कथा का क्षेत्र बदल जाता है और मध्यम वर्ग एवं उनकी समस्याओं को उठाया जाने लगा। कथा का मूल केंद्र मानव जीवन की सच्चाईयों से जुड़ने लगा। इन नए विषयों को कथा साहित्य का केंद्र बनाते हुए अनेक नए लेखक सामने आए। इनमें इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, जैनेन्द्र, उपेन्द्रनाथ ‘अश्क’ और अज्ञेय प्रमुख हैं। इन लेखकों में जैनेन्द्र प्रेमचंद युग के अंतिम चरण के सबसे योग्य लेखक के रूप में उभर कर आए। इनके अलावा भी कई लेखकों का आगमन हुआ। इन लेखकों के बीच प्रेमचंद युग में लेखिकाओं का भी पूर्ण योगदान सामने आया, जिनमें उषादेवी मित्रा, होमवती देवी, सत्यवती मलिक और कमला चौधरी प्रमुख हैं। इन लेखिकाओं ने नारी की निजी खूबियों एवं घरेलू जीवन की स्थिति का सुंदर रूप प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

प्रेमचंद के बाद की कहानियों का नाम किसी एक व्यक्ति विशेष के नाम से नहीं जुड़ा। दूसरे शब्दों में कहानी कला ने नया मोड़ लिया और यह विस्तृत होती चली गई। प्रेमचंदयुगीन कहानी के बाद हिन्दी कहानी लेखन के क्षेत्र में बदलाव आया और इसका दायरा विस्तृत रूप में फैलता गया। लेकिन साथ ही इसकी काल अवधि सीमित या कम होती गई।

1936 के बाद हिन्दी कहानी विभिन्न वादों में बँट गई। हिन्दी कहानी के विस्तार में पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। सन 1938 में 'कहानी' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ, पर यह 1942 में किसी कारणवश बंद हो गई। लेकिन दूसरी ओर 'हंस' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इस पत्रिका के जरिए हंसराज रहबर, अमृतराय, रांगेय राघव आदि लेखक कहानी लेखन में सामने आए। इस युग के शुरुआती समय में देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, लेकिन इस युग के प्रारम्भ के ग्यारह वर्ष के अंतर्गत देश आजाद हुआ लेकिन आजादी की खुशियों के साथ देश बँटवारे के शोक में डूबा हुआ भी था। देश की दयनीय स्थिति का प्रभाव कहानी लेखन में भी पड़ने लगा। इन स्थितियों के कारण लेखक यथार्थ की ओर उन्मुख हुए और नए कहानीकारों का आगमन होता गया।

1954 में 'कहानी' पत्रिका का पुनः प्रकाशन हुआ। इस काल में लेखक आम जनता के करीब आए और उनके यथार्थ से जुड़कर कहानी रचना को समृद्ध और धनी बनाते गए। इन नए कहानीकारों में मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ 'रेणु', धर्मवीर भारती आदि तथा महिला कहानीकारों में उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि प्रमुख हैं। इसके बाद 1960 से हिन्दी कहानी ने नयी कहानी के रूप में नया रूप धारण किया। इस नयी कहानी के प्रारंभ की पहचान को दृढ़ करने में 'नयी कहानियाँ' नामक पत्रिका ने अहम भूमिका निभाई है। इस पत्रिका का प्रकाशन 1960 में राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से हुआ। इसके संपादक श्री भैरवप्रसाद गुप्त थे। सटीक रूप से इन नयी कहानियों की प्रारम्भिक अवधि को निश्चित करना कठिन है। लेकिन इस काल में कहानियों की प्रवृत्ति में आए परिवर्तन एवं इसके पहले की कहानियों की तुलना में 1954 से 1965 तक की कहानियों में पूरी तरह से नयी कहानी की प्रवृत्तियाँ प्रतिष्ठित हो गईं। इन प्रवृत्तियों में प्रमुख रूप से यथार्थ जीवन को दर्शाया गया। साथ ही व्यक्ति को प्रधानता दी गई। मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण अधिक किया गया। आधुनिकता का बोध भी है और तीव्र भावावेश का अभाव है।

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी में कहानी लेखन में नया मोड़ आया, जिसमें कहानीकार प्रगतिवादी, यथार्थवादी, मनोवैज्ञानिक आदि की रचना की ओर अग्रसर हुए। प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी के बाद से हिन्दी कहानी ने आंदोलन रूप धारण किया और यह विभिन्न आन्दोलनों के रूप में विकास की ओर अग्रसर होती चली गई। प्रमुख आन्दोलनों का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित हैं:

अन्य प्रमुख कहानी आन्दोलन

कहानी आन्दोलनों की पंक्ति में सर्वप्रथम **नयी कहानी** आती है। 1947 में देश आज़ाद हुआ। आज़ादी के पहले और आज़ादी के बाद हिन्दी कथा साहित्य की प्रवृत्तियों में काफी परिवर्तन हुआ। स्वतंत्रता के बाद लिखी गई कहानियों को स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानी कहा जाता है। डॉ. विवेक शंकर के शब्दों में, “नयी कहानी भारतीय स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात लिखी गई उन कहानियों को कहा गया, जिसमें परंपरागत कहानी से आगे नये मूल्यों, नये भावबोधों और नए शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। इस प्रकार, नयी कहानी नये युगबोध, नये भावबोध, नये शिल्प-विधान की कहानी है।”[13] इन कहानियों में विभिन्न रचनात्मक पक्ष और बदलाव को देखा गया अर्थात इनमें नई अभिव्यक्तियाँ उभरकर सामने आईं। इस आंदोलन के प्रमुख कहानीकार हैं- राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश एवं कमलेश्वर। नयी कहानी के बाद आने वाले कहानी आन्दोलनों का विवरण इस प्रकार है -

अकहानी - नयी कहानी के विरोध के कारण अकहानी का जन्म हुआ। इस कहानी आंदोलन की कालावधि 1960 से 1963 तक मानी जा सकती है। इसमें कहानी के स्वीकृत मूल्यों को स्वीकार न करके अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा की गई, जिसमें यौन संबंध पर ज्यादा लिखा गया। दूसरी ओर कुछ लोग अकहानी को नयी कहानी के विकास के रूप में स्वीकार करते हैं। डॉ. विवेक शंकर के अनुसार, “अकहानी में ‘अनुभव की प्रामाणिकता’ के सूत्र को अनुभव की वैयक्तिकता या अनुभव की निजता के रूप में स्वीकारा गया, जिसके कारण अकहानी में सेक्स का खुला चित्रण हुआ और सभी प्रकार के नैतिक मूल्यों का भंजन तो हुआ ही, साथ-ही-साथ पारिवारिक, सामाजिक और साहित्यिक मूल्यों का विघटन भी हुआ। अकहानी का प्रमुख वर्ण्य-विषय सेक्स का चित्रण है।”[14] अकहानी आन्दोलन के समर्थकों में डॉ. गंगाप्रसाद विमल, जगदीश चतुर्वेदी, रवीन्द्र कालिया, दूधनाथ सिंह, प्रयाग शुक्ल, सुधा अरोड़ा, ज्ञान रंजन, रमेश बक्षी, श्रीकान्त वर्मा, विजयमोहन सिंह, विश्वेश्वर आदि प्रमुख हैं।

सचेतन कहानी - इस कहानी आन्दोलन के प्रवर्तक डॉ. महीप सिंह हैं। इस आन्दोलन का आरंभ 1964 ई. में ‘आधार’ पत्रिका के ‘सचेतन कहानी विशेषांक’ के प्रकाशन से माना जाता है। यह कहानी नई कहानी की तुलना में अधिक संतुलित एवं व्यापक दृष्टिकोण रखती है। इस आन्दोलन से जुड़े अन्य कहानीकारों में कमल जोशी, मधुकर सिंह, योगेश गुप्त, वेदराही, हिमांशु जोशी, मनहर चौहान आदि के नाम उल्लेखनीय

हैं। डॉ. रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में - “नयी कहानी के दायरे में जो नकारात्मक प्रवृत्तियाँ पनप रही थीं, उन्हीं का विरोध ‘सचेतन कहानी’ आन्दोलन में किया गया था। यही नकारात्मक प्रवृत्तियाँ ‘अ-कहानी आन्दोलन’ के रूप में उभर कर सामने आयी थीं। ‘सचेतन कहानी’ आन्दोलन बहुत शीघ्र बिखर गया।”[15] बदलते समय के साथ कहानीकारों के विचारों में परिवर्तन होते गए, जिसके परिणामस्वरूप अनेक कहानी आंदोलनों का रूप सामने आया।

सहज कहानी - अमृतराय ने 1968 ई. में ‘नयी कहानियाँ’ पत्रिका का प्रकाशन इलाहाबाद से शुरू किया। इस पत्रिका का प्रकाशन पहले दिल्ली के राजकमल प्रकाशन से होता था। इन्होंने **सहज कहानी** पर आवाज उठाई, लेकिन यह आन्दोलन के रूप में प्रचलित नहीं हो सकीं। इस आन्दोलन के प्रतिष्ठित न हो सकने के कारण को स्पष्ट करते हुए डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है - “अमृतराय ने किसी भी प्रकार के बने-बनाये साँचे का विरोध किया और अपनी बात बलपूर्वक प्रस्तुत की, किन्तु उन्हें सहज कहानी लिखने वाले नये लेखक उपलब्ध नहीं हुए।”[15] इस कहानी आंदोलन के समर्थक कम होने के कारण यह जल्द ही बिखर गई। किसी का विरोध करने एवं बलपूर्वक अपनी बात रख देने से कोई समर्थन यों ही नहीं दे देता है।

समांतर कहानी - सन 1971 ई. के आस-पास समांतर कहानी आन्दोलन का प्रवर्तन कमलेश्वर ने ‘सारिका’ पत्रिका के माध्यम से किया। समांतर से इनका आशय कहानी को आम आदमी के जीवन की परिस्थितियों एवं समस्याओं के समांतर प्रतिष्ठित करने से है। इस आन्दोलन के रचनाकारों ने आम आदमी के संघर्षों, चिन्ताओं एवं तकलीफों को दर्शाया। इस आन्दोलन से जुड़े प्रमुख रचनाकारों के नाम हैं - अरविंद, आशीष सिन्हा, इब्राहीम शरीफ, कामतानाथ, जितेन्द्र भाटिया, दामोदर सदन, निरुपमा सोबती, मधुकर सिंह, मृदुला गर्ग, सुधा अरोड़ा, शीला रोहेकर, विभुकुमार, श्रवणकुमार, सतीशज माली, सुदीप, सनत कुमार, से. रा. यात्री, रमेश उपाध्याय। यह आन्दोलन भी इसके आगे की आंदोलनों की तरह ज्यादा देर तक नहीं चल पाया। डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने कहा है कि - “इसके सिद्धान्त-सूत्र सोच-समझकर निर्धारित किये गये थे, कहानियों के भीतर से उभर कर सामने नहीं आये थे। यह सारा आन्दोलन कमलेश्वर की महत्त्वाकांक्षा का द्योतक अधिक था, रचना-संदर्भों से उभरकर रचनाकारों की सक्रियता की अनिवार्य परिणति के रूप में सामने नहीं आया था।”[16] इस कहानी

आंदोलन में भले ही आम आदमी के संघर्षों को दर्शाया गया हो, मगर पाठकों के मन को गहराई से नहीं छुआ गया।

जनवादी कहानी - इसके बाद जनवादी कहानी की ओर कुछ रचनाकारों का ध्यान आकर्षित हुआ। इसकी शुरुआत दिल्ली विश्वविद्यालय में 1977 ई. में स्थापित जनवादी विचारमंच से मानी जा सकती है। अगले वर्ष ही इसी मंच के तत्त्वावधान में हिन्दी लेखकों का एक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 1967 से 1977 ई. तक के जनवादी साहित्य का मूल्यांकन किया गया। राजधानी दिल्ली में ही 1982 ई. में जनवादी लेखकमंच का पहला राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। इसी से जनवादी आन्दोलन क्रियाशील हुई। इस तरह की कहानी की शुरुआत कहानी सम्राट प्रेमचंद की ‘कफन’ और ‘पूस की रात’ कहानियों से मानी गई। इस कहानी परंपरा में समाज के निचले वर्ग जैसे किसानों, मजदूरों, दलितों और असहायों की दयनीय जीवन स्थिति एवं संघर्षों को दर्शाया गया है। जनवादी कहानी की परंपरा का विकास क्रम यशपाल, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त, मार्कण्डेय, भीष्म साहनी, अमरकान्त, शेखर जोशी आदि की कहानियों में परिलक्षित होता है। इस परंपरा को आगे बढ़ाने में ज्ञानरंजन, काशीनाथ सिंह, रमेश उपाध्याय, रमेश बतरा, हेतु भारद्वाज, नमिता सिंह, असगर वजाहत, धीरेन्द्र अस्थाना, उदय प्रकाश आदि लेखक उल्लेखनीय हैं।

सक्रिय कहानी - इस कहानी आन्दोलन का प्रवर्तन राकेश वत्स ने 1979 ई. में ‘मंच’ पत्रिका से किया। यह कहानी आन्दोलन मूलत: आदमी को अपनी कमजोरियों से उभारकर सामना करने और मज़बूत बनाने की ओर अग्रसर करता है। इस कहानी आन्दोलन के समर्थकों में रमेश बतरा, चित्रा मुद्गल, सच्चिदानन्द धूमकेतु, सुरेन्द्र सुकुमार, धीरेन्द्र अस्थाना आदि रचनाकारों के नाम प्रमुख हैं। सक्रिय कहानी के बारे में डॉ. रामचन्द्र तिवारी का कहना है कि - "‘सक्रिय कहानी’ की अवधारणा में ‘समांतर कहानी’ और ‘जनवादी कहानी’ की अवधारणाओं को मिला दिया गया है। इस आन्दोलन का प्रभाव भी सीमित ही रहा।"[17] कहानियों का रूप बदलता गया, जिसके कारण अनेक कहानी आंदोलनों का जन्म हुआ, मगर मानव मन की अस्थिरता के कारण इन आंदोलनों का समय कम होता गया। बदलावों के आने से हिन्दी कथा साहित्य समृद्ध होता चला गया।

हिन्दी कथा साहित्य की शुरुआत भले ही आधुनिक काल से हुई हो, पर अपनी शुरुआती दौड़ से ही हिन्दी कथा साहित्य का विकास बड़ी तेजी से होता गया। इसमें कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा वृतांत आदि अनेक विधाओं का संकलन रूप मिलता हैं। ये विधाएँ अपने-अपने प्रत्येक क्षेत्र में समृद्ध होती गईं और विकास के पथ पर अग्रसर हुईं। हिन्दी कहानी 1900 ई. से 1936 ई. तक एक निश्चित दिशा की ओर उन्मुख हुई, पर प्रेमचन्दोत्तर कहानी के बाद से हिन्दी कहानी के विकास क्रम में विभिन्न आन्दोलनों का रूप देखा गया। इन आन्दोलनों ने हिन्दी कहानी को किसी-न-किसी रूप में समृद्ध किया और प्रवृत्तियों में विविधता का मिश्रण दिया। हालाँकि इन आन्दोलनों की काल अवधि कम रहीं। इन आन्दोलनों से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक आन्दोलनों में मानव जीवन के विभिन्न संदेर्भों को विभिन्न रूपों में प्रकट किया गया है।

प्रत्येक रचनाकार अपने विचारों को अपनी रचना के द्वारा दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करता है। साथ ही अपने तरीके को ध्यान केन्द्रित करने के लिए अपने विचारों पर ज़ोर देता है। रचनाकारों के माध्यम से ही समाज की सच्चाई को देखा जा सकता, जिसके कारण साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। अर्थात रचनाकार अपनी रचनाओं का विषय समाज से ही लेता है। साहित्यकारों के लिए समाज से बढ़कर और कोई भंडार नहीं है। कहानी साहित्य का सफर जादुई तिलिस्म से जीवन के यथार्थ की ओर उन्मुख हुआ, जिसने समाज की प्रवृत्तियों को सामने लाने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

****

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृ.- 144
2. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ.- 293
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2016, पृ.- 359
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र और डॉ. हरदयाल, मयूर बुक्स, नयी दिल्ली, 2022, पृ.-463

5. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ.- 292
6. वही, पृ.- 293
7. वही, पृ.- 293
8. वही, पृ.- 293
9. वही, पृ.- 294
10. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2018, पृ.- 144
11. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ.- 294
12. वही, पृ.- 295
13. हिन्दी साहित्य, डॉ. विवेक शंकर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2016, पृ.- 282
14. वही, पृ.- 283
15. हिंदी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ.- 305
16. वही, पृ.- 305
17. वही, पृ.- 306
18. वही, पृ.- 307